



(पुस्तक का आवरण: "Frauen vergibt uns" ("स्त्रियो, हमें क्षमा कीजिए"), तीसरा संशोधित और परिवर्धित संस्करण – हम पुरुषों को क्या सुधारना है। स्त्री और पुरुष की भूमिका के विषय में – Hans-Jörg Ronsdorf)

स्त्रियो, हमें क्षमा कीजिए! (FRAUEN, VERGEBT UNS!)

हम पुरुषों को क्या सुधारना है

स्त्री और पुरुष की भूमिका के विषय में

Hans-Jörg Ronsdorf

पेपरबैक www.frauen-vergebt-uns.de पर मँगाया जा सकता है,

मूल्य € 13.80, डाक-व्यय अतिरिक्त।

तीसरा परिवर्धित संस्करण, नवम्बर 2021

© Hans-Jörg Ronsdorf – सर्वाधिकार सुरक्षित।

Albis 6 1/2

87477 Sulzberg

टाइपसेटिंग: Hans-Jörg Ronsdorf, Papyrus Autor के साथ

सम्पर्क ई-मेल: hj-ronsdorf@t-online.de

ISBN 978-3-9820715-5-8

आवरण-सज्जा: Tobias Stricker

चित्रांकन: Laura-Kristin Ronsdorf

मुद्रण: www.wir-machen-druck.de

प्रयुक्त बाइबल-अनुवाद, यदि अन्यथा न बताया गया हो:

Elberfelder Übersetzung (जर्मन बाइबल अनुवाद), Edition CSV Hückeswagen

अपनी प्रिय पत्नी के लिए,

अपनी अद्भुत बेटियों के लिए,

अपनी आदरणीय माँ के लिए,

अपनी दादी-नानी के लिए,

अपनी बहन के लिए,

मसीह में अपनी बहनों

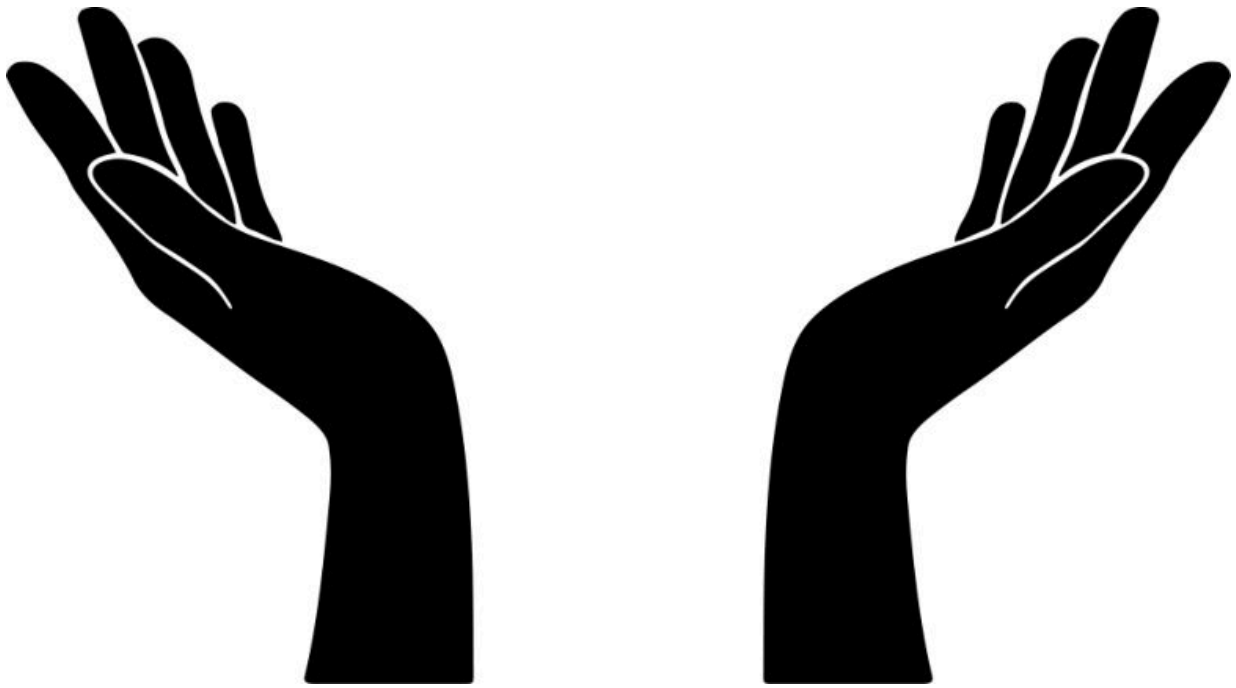
और सहेलियों के लिए,

हव्वा की सब बेटियों के लिए,

जिनके साथ मिलकर मैंने

परमेश्वर के राज्य के लिए काम किया है

और आगे भी सेवा करूँगा।



विषय-सूची	पृष्ठ
1 प्रस्तावना	13
1.1 दूसरे परिवर्धित संस्करण की प्रस्तावना	17
1.2 यह पुस्तक कौन लिख रहा है	18
2 सृष्टि और पतन	24
2.1 सब कुछ कैसे आरम्भ हुआ	25
2.1.1 छठे दिन का काम	26
2.1.2 मनुष्य: परमेश्वर का स्वरूप - imago Dei	27
2.1.3 पुरुष और स्त्री के रूप में मनुष्य	28
2.1.4 मनुष्य और परमेश्वर का सौंपा हुआ कार्य	29
2.1.5 आदम और हव्वा की सृष्टि	31
2.1.6 इब्रानी मूल शब्दों पर एक संक्षिप्त विषयान्तर	32
2.1.7 आदम को सहायता चाहिए	33
2.1.8 हव्वा की सृष्टि होती है	36
2.1.9 पसली से	37
2.1.10 नारी (Männin)	39
2.1.11 एक-दूसरे के लिए दिए गए वरदान	41
2.2 पुरुष और स्त्री का पतन	44
2.2.1 हव्वा का उत्तर	47

विषय-सूची	पृष्ठ
2.2.2 हव्वा का कष्ट, गर्भावस्था और अधीनता	48
2.2.3 तेरी लालसा उसकी ओर होगी, वह तुझ पर प्रभुता करेगा	53
2.3 समानता के विरुद्ध आपत्तियाँ	57
2.4 भिन्नताएँ और भूमिकाओं का बँटवारा	61
2.5 सृष्टि की व्यवस्था	65
2.5.1 अदन की वाटिका से नए यरूशलेम तक	68
2.6 वह तुझ पर प्रभुता करेगा – इतिहास	69
2.6.1 प्राचीन काल	70
2.6.2 अरस्तू	71
2.6.3 सम्पत्ति के रूप में स्त्री	73
2.6.4 पितृसत्ता	74
2.6.5 यहूदी चिन्तन पर यूनानी प्रभाव	75
2.6.6 कलीसियाई पिता	76
2.6.7 धर्मसुधार	78
2.6.8 धर्मनिरपेक्ष स्त्री-अधिकार आन्दोलन	80
3 यीशु, मसीहा, और स्त्रियाँ	84
3.1 सेवा करनेवाली शिष्याएँ	86
3.2 स्त्रियों को सीखना चाहिए	87
3.3 सब बराबर	87
3.4 मासिक धर्म अब अशुद्धता नहीं	88
3.5 निकाली गई और पाई गई	89
3.6 व्यभिचार में दो लोग होते हैं	90
3.7 सीधी और पूरे कद में खड़ी होना	92
3.8 कोई दोहरा मापदण्ड नहीं	93
3.9 बेहिसाब अनुग्रह	93
3.10 क्रूस: पुरुष कहाँ हैं?	95
3.11 मरियम, प्रेरिता	96
4 पौलुस, स्त्रियों का मित्र	100
4.1 लुदिया	101

विषय-सूची	पृष्ठ
4.2 फीबे	103
4.3 प्रिस्का	105
4.4 यूनियास	106
4.5 मरियम, त्रूफैना और त्रूफोसा, पिरसिस	108
4.6 यूओदिया और सुन्तुखे	109
4.7 खलोए	109
4.8 नुमफास	110
4.9 पौलुस, दूध पिलानेवाली माता	112
5 विवाह में पुरुष और स्त्री	115
5.1 प्राचीन घराना और उसके नियम	115
5.1.1 नए नियम में घर-परिवार के नियम	117
5.1.2 मसीही घर-परिवार के नियमों का प्रभाव	118
5.1.3 इफिसियों 5 में घर-परिवार के नियम	120
5.1.4 एक दूसरे के अधीन रहने का कारण	121
5.1.5 मसीही जीवन के लिए निर्देश - आज	124
5.1.6 प्राचीन घराने में स्त्री	125
5.2 सिर और अधीनता: इफिसियों 5	127
5.2.1 सिर	128
5.2.2 प्राचीन काल में परिवार	128
5.2.3 शब्दशः लें?	129
5.2.4 सन्दर्भिकरण	132
5.2.5 एक बार फिर: सिर	133
5.2.6 निष्कर्ष	135
5.3 अधीन रहना	138
5.3.1 सारांश	145
6 कलीसिया में पुरुष और स्त्री	149
6.1 1 कुरिन्थियों 11 – सिर, बाल और ओढ़नी	152
6.1.1 पाठ की व्याख्या के लिए मार्गदर्शक सिद्धान्त और संकेत	153
6.1.2 पाठ का लागू होने का क्षेत्र	154

विषय-सूची	पृष्ठ
6.1.3 एक सिर वाले तीन जोड़े	156
6.1.4 सिर का क्या अर्थ है?	157
6.1.5 कुरिन्थुस में सिर ढाँकना	162
6.1.6 सिर पर अधिकार का चिह्न रखना?	166
6.1.7 आज की प्रासंगिकता	167
6.1.8 व्याख्यात्मक भावानुवाद	168
6.1.9 समापन और सारांश	171
6.1.10 1 कुरिन्थियों 11 का एक और पाठ-दृष्टिकोण	173
6.1.11 उद्धरणों के उदाहरण	173
6.1.12 1 कुरिन्थियों 11:2-16 का वैकल्पिक अनुवाद	175
6.1.13 सारांश	177
6.2 बोलना नहीं, बल्कि चुप रहना	182
6.2.1 प्रश्न	183
6.2.2 अध्याय के अन्त में उलझन	185
6.2.3 उद्धरण के रूप में पढ़ना	186
6.2.4 एक रोमी कानून?	190
6.2.5 कदापि नहीं!	191
6.2.6 अन्य विश्वसनीय व्याख्याएँ	192
6.2.7 आज्ञाकारी स्त्रियाँ	195
6.3 क्या स्त्रियाँ शिक्षा दे सकती हैं?	199
6.3.1 पाठ 1 तीमुथियुस 2:8-15	200
6.3.2 इफिसुस की ऐतिहासिक परिस्थिति	201
6.3.3 पृष्ठभूमि	203
6.3.4 हर जगह प्रार्थना, क्रोध और आभूषण	204
6.3.5 चुपचाप और अधीनता में सीखना	206
6.3.6 न शिक्षा देना और न पुरुष पर अधिकार जताना	207
6.3.7 क्या शिक्षा देना प्रभुता करना है?	207
6.3.8 "अधिकार जताने" का क्या अर्थ है?	209
6.3.9 इफिसुस में आदम और हव्वा	212

विषय-सूची	पृष्ठ
6.3.10 मैं अभी अनुमति नहीं देता	213
6.3.11 बच्चे जनने के द्वारा उद्धार?	214
6.3.12 1 तीमुथियुस आज	216
6.3.13 निष्कर्ष	217
6.3.14 तीमुथियुस के पाठ का व्याख्यात्मक भावानुवाद	218
6.4 सार्वभौमिक और समय से बँधी आज़ाएँ	220
6.4.1 बाइबलवाद और Sola Scriptura	221
6.4.2 शब्दशः लेना और शाब्दिक अर्थ	224
6.5 याजिकाएँ, प्राचीनाएँ और सेविकाएँ	225
6.5.1 सब विश्वासियों का याजकपद	226
6.5.2 प्राचीन और प्राचीनाएँ	227
6.5.3 वह भले काम की इच्छा रखती है	228
6.5.4 सेविकाएँ (डीकनेस)	230
6.5.5 प्रचारिकाएँ	232
6.5.6 सार	234
7 “मसीह में एक”: गलातियों 3:28	236
7.1 पाठ क्या कहता है	237
7.2 पाठ सीधे क्या नहीं कहता	238
7.3 पाठ परोक्ष रूप से फिर भी क्या कहता है	239
7.4 यहूदी और यूनानी	240
7.5 दास और स्वतन्त्र	240
7.6 दास-प्रथा के विषय में जानकारी	241
7.7 पुरुष और स्त्री	242
7.8 सांसारिक और आत्मिक?	243
7.9 न कोई नर है, न नारी	244
7.10 सारांश और निष्कर्ष	245
8 परमेश्वर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा	247
8.1 क्या परमेश्वर पुरुष है?	248
8.2 तू अपने लिए कोई मूर्ति न बनाना	250

विषय-सूची	पृष्ठ
8.3 परमेश्वर के स्त्री-रूपी चित्र	251
8.4 पिता और पुत्र	252
8.5 अनन्त पुत्र की अधीनता?	253
8.6 यीशु और उसके 12 चेले	256
8.7 सारांश	258
9 मेरा पाप-स्वीकार	259
9.1 निष्कर्ष और आगे की दृष्टि	264
9.1.1 संकेत और सुझाव	268
10 अन्तर	271
11 विभिन्न पाठकों के उपसंहार	275
11.1 खुली दृष्टि पर झाड़ियाँ उग आई हैं!	275
11.2 क्या कुछ सम्भव हो सकता था!	278
11.3 “स्त्री-प्रश्न” और “भाई-बहनों का प्रेम”	280
11.4 परिवर्तन	282
12 अन्तिम निवेदन: क्या स्त्री-प्रश्न सचमुच इतना महत्वपूर्ण है?	284
12.1 बात कुछ (वर्जित) सेवाओं की नहीं है	284
12.2 पुरुष क्या महसूस करते हैं और क्या नहीं	285
12.3 स्त्री-प्रश्न में हम बाइबल को कैसे पढ़ते हैं	286
12.4 संवेदनशीलता	287
12.5 मेरा उद्देश्य क्या नहीं है	288
12.6 अलग होने का कारण?	288
12.7 स्त्रियों को खड़ा होना होगा	289
12.8 भविष्य में और अभी	290
13 ग्रन्थ-सूची	291
13.1 लेखक की पुस्तकें	294
14 अनुशंसित पुस्तकें	295
15 अपनी टिप्पणियाँ	300

1 प्रस्तावना

इस सदाबहार विवाद पर एक और पुस्तक? क्या इस पर सब कुछ कहा और लिखा नहीं जा चुका? फिर से झगड़ना, या झगड़ा जारी रखना? क्या विश्वास की रक्षा के लिए कोई मसीही-प्रतिवाद (अपोलोजेटिक्स) का विषय अधिक महत्वपूर्ण नहीं होता? मुझे स्पष्ट हुआ कि यह विषय भी अपोलोजेटिक्स का ही भाग है। यह एक उत्तर-आधुनिक धर्मनिरपेक्ष समाज में सार्वभौमिक नैतिक मानदण्डों की रक्षा है, पर साथ ही एक रूढ़िवादी और बाइबलवादी मसीहियत के भीतर भी। मैं स्पष्ट करूँगा कि दूसरी बात भी क्यों सच है।

इन प्रश्नों पर छोटी-छोटी लड़ाइयाँ, संघर्ष और खींचतान इस पुस्तक के बिना भी चलती रहेंगी। यह आज भी कलीसियाओं को बाँट रही है। कुछ तो इसी प्रश्न पर कि क्या आराधना सभा में स्त्रियों की आवाज़ सुनाई भी दे सकती है। दूसरे इस प्रश्न पर कि क्या उनकी सेविकाएँ या प्राचीनाएँ हो सकती हैं। या क्या वे अगुवाई के दायित्व निभा सकती हैं और प्रचार कर सकती हैं।

कुछ दृष्टिकोण ऐसे हैं जो हमारे मन में किलों की तरह अजेय बने हुए हैं: कि परमेश्वर के वचन को हर युग-धारा के विरुद्ध शब्दशः लिया जाना चाहिए। और वे लोग, जिनके मन में प्रश्न और सन्देह हैं कि क्या आज हमें इसे इसी तरह शब्दशः मानना है।

इस पुस्तक में मैं इस विषय पर अपने अध्ययन का सार प्रस्तुत करता हूँ। जो इस विषय के साहित्य से परिचित है, वह शायद ही नई अन्तर्दृष्टियों की आशा कर सकता है। न ही यहाँ उन सब दृष्टिकोणों का विवेचन है, जो अत्यन्त रूढ़िवादी से लेकर अत्यन्त प्रगतिशील तक पाए जाते हैं। यह पुस्तक **कोई** खुले परिणाम वाला अध्ययन नहीं है – यह एक स्पष्ट दृष्टिकोण है, जिसे खोजने और प्रमाणित करने में मुझे दशकों लगे। यह उससे भिन्न है जो मैंने पहले सीखा और जिसका समर्थन किया था।

क्या इसे समझाने के लिए पूरी पुस्तक चाहिए? क्या यह इतना जटिल है? हाँ और नहीं। यदि आप न्याय की भूलों का इतिहास देखें, जैसा कि अमेरिका में मृत्युदण्ड पाए लोगों के मामलों में दिखाई देता है, तो अक्सर निर्दोषता सिद्ध करने के लिए प्रमाणों और परिस्थितिजन्य साक्ष्यों को जुटाने में भारी परिश्रम करना पड़ता है। पर कभी-कभी एक जीन-परीक्षण (डीएनए टेस्ट) ही काफी होता है। उसमें चाहे जितना परिश्रम लगे, ऐसे मृत्युदण्ड पाए लोगों के चेहरे देखिए, जो 30, 40 या 50 वर्ष बाद रिहा होते हैं! इसी तरह आप इस पुस्तक में सरल विचार पाएँगे, कभी-कभी कुछ अधिक जटिल भी। बाइबल को समझना हमेशा सरल नहीं है। ऐसा मानना भ्रम होगा। स्वयं मल्लुआरे और प्रेरित पतरस ने भी यह बात कही, जब वह पौलुस की पत्रियों के विषय में कहता है (2 पतरस 3:15) कि उन्हें समझना सरल नहीं है।

जब यह पुस्तक पढ़ी जाएगी, तो खण्डन, प्रतिवाद और आक्रोश आने में देर नहीं लगेगी। मैं इन प्रक्रियाओं को जानता हूँ और स्वयं इनका भाग रहा हूँ। चाहे सोच में कोई परिवर्तन न भी आए, कम से कम यह विषय चर्चा में तो आएगा।

ठीक अभी, जब मैं ये पंक्तियाँ लिख रहा हूँ, अमेरिका के सुसमाचारवादी (इवैन्जेलिकल) जगत में इस पर एक बार फिर तीखी बहस चल रही है। मैं यह दावा नहीं कर सकता कि मैंने यह पुस्तक बिना भावनाओं के लिखी है। फिर भी मैंने वस्तुनिष्ठ रहने का प्रयास किया है। इसका निर्णय पाठक करें।

और: निश्चय ही कुछ बातें ऐसी हैं जिन पर भिन्न मत रखा जा सकता है। वहाँ मैं अपने निर्णय इस प्रकार लेता हूँ कि वे मेरी समझ के अनुसार बाइबल के बड़े चित्र में ठीक बैठें।

मेरे हृदय में वे बहुत-सी स्त्रियाँ और प्रभावित पुरुष हैं, जो यीशु के पीछे चलते हैं और लिंग-भूमिकाओं के इस विषय को तथा बोलने, शिक्षा देने और अगुवाई करने पर लगे प्रतिबन्धों को सन्दिग्ध और बोझ अनुभव करते हैं। क्योंकि एक ओर वे बाइबल को गम्भीरता से लेना चाहते हैं, पर दूसरी ओर इसे व्यवहार में नहीं ला पाते। इसके साथ, और यह कोई छोटी बात नहीं, यह भी जुड़ा है कि इस मामले में संसार हमें किस दृष्टि से देखता है। वही संसार, जिसके पास हम सुसमाचार ले जाते हैं।

क्या परमेश्वर ने इसे हमारे लिए इतना कठिन बना दिया है? क्या उसकी यह इच्छा है कि इन प्रश्नों में अध्ययन, प्रार्थना और चर्चा के लाखों घण्टे लगाए जाएँ? कि फूट को स्वीकार किया जाए और एकता की बलि दी जाए?

मुझे पूरा विश्वास है, और यह पुस्तक इसी के पक्ष में मेरा निवेदन है, कि ये प्रश्न अत्यन्त सामयिक हैं। क्योंकि यदि स्त्रियाँ पदानुक्रम में पुरुष के नीचे हैं, और इसी कारण कलीसिया में उनकी सेवा सीमित है (इस हर आश्वासन के बावजूद कि अनगिनत अन्य, गैर-सार्वजनिक सेवाएँ हैं), तो यदि हम भूल पर हैं तो परमेश्वर हम पर दया करे।

यह आज्ञाकारिता का प्रश्न है। दोनों लिंगों के लिए। किसी व्यवस्थावादी, दासवत् और भयभीत आज्ञाकारिता का नहीं।

यह पुस्तक पिछले लगभग 40 वर्षों में मेरे अध्ययनों, अनगिनत बातचीतों और इंटरनेट-मंचों पर हुई चर्चाओं का सार है। मैंने दूसरों से बहुत कुछ सीखा है।

मैं एक बाइबलीय मार्ग दिखाने का प्रयास करता हूँ। मैं इसे यथासम्भव सरलता से समझाता हूँ। कभी-कभी किसी पाठिका या पाठक के लिए यह शायद बहुत जटिल हो जाए। तब मेरा सुझाव है कि उस भाग को छोड़कर अगला अध्याय पढ़ें। मैं धर्मविज्ञानी के रूप में नहीं लिखता, न धर्मविज्ञानियों के लिए, और न उनके लिए जो स्वयं को ऐसा समझते हैं। मेरे सामने वे लोग हैं, जिनके साथ मैं लम्बे समय तक चला हूँ, और वे जो नए-नए विश्वास में आते हैं, जिनकी शिक्षा के द्वारा मुझे सेवा करनी है। मैं आशा और प्रार्थना करता हूँ कि यह पुस्तक पुरुषों और स्त्रियों दोनों के लिए सहायक हो।

कुछ बाइबल-वचनों पर नए सिरे से विचार करना होगा। ऐसा पहली बार नहीं हो रहा है। कुछ लोगों के लिए बाइबल के पाठों की नई व्याख्या धृष्टता और सन्देहजनक है। उनके अनुसार सीमाएँ खिसकाई जा रही हैं। पर **“जो धर्मविज्ञान स्वयं को धर्मसुधार की परम्परा में देखता है, उसके स्वभाव में ही यह बात है कि आदतों पर प्रश्न उठाए जाएँ और बाइबल के पाठ नए सिरे से पढ़े जाएँ”**¹²

आपको इस पुस्तक में बहुत-से उद्धरण मिलेंगे। ये मूल्यवान विचार मुझे अक्सर अंग्रेज़ी-भाषी जगत में मिले, और मैं उन्हें जर्मन-भाषी पाठकों तक पहुँचाना चाहता हूँ।

अन्त में: **हमारा धर्मविज्ञान त्रुटिहीन नहीं है। कभी नहीं।** हम चाहे इसकी कितनी भी इच्छा करें। सब पुस्तकों की तरह इस पुस्तक में भी त्रुटियाँ, कमज़ोरियाँ और खूबियाँ हैं। इस पुस्तक पर भी यह लागू होता है कि दूसरे इसे बेहतर लिख सकते थे। मैं उन सब बहनों और भाइयों का धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने अपने विचार, सुधार, सुझाव और उपसंहार दिए। विशेष रूप से मैं Conny Endrös (Lauben bei Kempten im Allgäu) और Bernd Hüsken (Schwelm) का सम्पादन (लेक्टोरेट) के लिए धन्यवाद करता हूँ। इससे मुझे आनन्द होता है और Schwelm में बिताई अपनी युवावस्था याद आती है, जहाँ मैं बड़ा हुआ और जहाँ मुझे एक अच्छी आत्मिक नींव मिली।

Hans-Jörg Ronsdorf

Sulzberg im Allgäu, नवम्बर 2020

मैं तेरी विधियों से आनन्दित रहता हूँ, मैं तेरे वचन को नहीं भूलूँगा।

तेरी चित्तौनियाँ मेरा सुख-आनन्द हैं, वे मेरी परामर्शदाता हैं।

मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग पर दौड़ता हूँ, क्योंकि तू मेरे हृदय को विशाल करता है।

भजन संहिता 119:16; 24; 32 (Zürcher Bibel – जर्मन बाइबल अनुवाद)

1.1 दूसरे परिवर्धित संस्करण की प्रस्तावना

दूसरे संस्करण के लिए मैंने हल्के संशोधन और कुछ परिवर्धन करने का निर्णय लिया। कुछ सुधार, पर उससे अधिक परिवर्धन और शैली-सम्बन्धी सुधार मुझे आवश्यक लगे।

मुख्य रूप से मैंने इस विषय के तीन केन्द्रीय पाठों वाले अध्यायों को संशोधित किया, उनमें जोड़ा, पर जहाँ सम्भव था वहाँ छोटा भी किया। यह विशेष रूप से सिर, बाल और ओढ़नी वाले अध्याय पर लागू होता है।

पहले संस्करण के प्रकाशन के बाद मैंने और भी सामग्री देखी और स्वयं भी तैयार की। इसे मेरी वेबसाइट www.frauen-vergebt-uns.de से निःशुल्क डाउनलोड किया जा सकता है।

अमेरिका में लगभग हर महीने इस विषय पर एक नई पुस्तक प्रकाशित होती है। इनमें से अधिकतर उच्च धर्मवैज्ञानिक गुणवत्ता की होती हैं और नए नियम के पाठों पर काम करती हैं। वे इस विषय पर इस प्रकार प्रकाश डालती हैं कि उससे वही पुष्ट होता है जो मैं इस पुस्तक में कहना चाहता हूँ। मुझे पहले से कहीं अधिक निश्चय है कि जीवन के सब क्षेत्रों में पुरुष और स्त्री का पूर्ण समान दर्जा परमेश्वर की इच्छा है।

मैं आशा और प्रार्थना करता हूँ कि यह बाइबलीय सत्य विवाहों, परिवारों और कलीसियाओं में चंगाई लाए। शायद यह पुस्तक अब जाकर वैसी बनी है जैसी उसे होना चाहिए। फिर भी यह अब भी भूल कर सकती है; यह सत्य नहीं, बल्कि मेरी व्याख्या है।

Hans-Jörg Ronsdorf, Sulzberg, जुलाई 2021

तीसरा संस्करण बढ़ी हुई माँग के कारण आवश्यक हुआ। साथ ही मैंने इस अवसर का उपयोग कुछ और छोटे सुधार और परिवर्धन करने के लिए किया। इससे इस पुस्तक के सन्देश में कोई परिवर्तन नहीं होता। मुझे आनन्द है कि यह विषय अधिक से अधिक चर्चा में आ रहा है और प्रभु में बहनें अधिक से अधिक समझ रही हैं कि उनकी बुलाहट क्या है।

Hans-Jörg Ronsdorf, Augsburg, नवम्बर 2021

1.2 यह पुस्तक कौन लिख रहा है

अधिकतर किसी पुस्तक की विषय-वस्तु उसके लेखक से अधिक महत्वपूर्ण होती है। इस मामले में, रूढ़िवादी मसीहियों के बीच इतने संवेदनशील विषय पर, मैं पाठक को बताना चाहता हूँ कि यह पुस्तक कौन लिख रहा है। और वह उन दृष्टिकोणों तक कैसे पहुँचा, जिनका यहाँ वर्णन किया गया है।

अपनी आयु के छत्तीसवें वर्ष तक मैं अपनी पत्नी और पाँच बच्चों के साथ एक (बन्द, एक्सक्लूसिव) ब्रदरन सभा (Brüderversammlung) का भाग था, जिसे “पुरानी सभा” (Alte Versammlung) के नाम से भी जाना जाता है।

वे स्वयं को यह नाम नहीं देते, क्योंकि वे हर प्रकार के “नामकरण” को अस्वीकार करते हैं। इन सभाओं या आराधना सभाओं में स्त्रियाँ चुप रहती हैं। वे भाग नहीं लेतीं। लगभग हमेशा पुरुष और स्त्रियाँ अलग-अलग बैठते हैं। आराधना सभा में स्त्रियाँ पतलून नहीं पहनतीं। स्त्रियाँ सिर ढाँकती हैं।

फिर हम Allgäu की एक कलीसिया(-आन्दोलन) का भाग बने, जिसका आरम्भ 80 के दशक में परमेश्वर के एक कार्य से हुआ था। वहाँ कुछ कलीसियाओं में स्त्रियों को ऊँचे स्वर में प्रार्थना करने, अपने जीवन की गवाही देने या कोई गीत सुझाने की अनुमति थी। अपने अतीत के कारण मुझे इसमें कठिनाई होती थी, क्योंकि 1 कुरिन्थियों 14 स्त्रियों को चुप रहने की आज्ञा देता है।

कुछ वर्षों के बाद मैंने इस प्रश्न का फिर से सामना किया और पवित्रशास्त्र की गहराई से जाँच की। मुझे सचमुच स्पष्ट हुआ कि यह प्रथा, कि स्त्रियाँ ऊँचे स्वर में प्रार्थना करें, गवाही दें और गीत सुझाएँ, पूरी तरह बाइबलीय है। मेरे कारण आगे के अध्यायों में मिलेंगे।

उनकी भागीदारी को मैंने अधिकाधिक सकारात्मक रूप में अनुभव किया। यहीं यह आपत्ति उठाई जा सकती है कि पवित्रशास्त्र की मेरी जाँच इसी सकारात्मक रवैये के कारण पहले से उस दिशा में प्रभावित थी। अचेतन रूप से ऐसा हो सकता है। सचेत रूप से ऐसा नहीं था। मेरा विश्वास ठीक-ठीक क्यों बदला, यह मैं दिखाऊँगा।

अब उस कलीसिया में स्थिति यह थी कि स्त्रियाँ प्रचार नहीं करती थीं, और न सेविका और न प्राचीना बन सकती थीं। मित्र कलीसियाओं में भी ऐसा ही था और है। कुछ में तो बहनें चुप भी रहती हैं, जिसका कारण जर्मनी की स्वतन्त्र ब्रदरन सभाओं और Salzburgerland की एक कलीसियाई धारा का प्रभाव या उनसे निकटता है।

कुछ वर्ष पहले मैंने वह कलीसिया छोड़ दी। ऐसे कारणों से, जिनका यहाँ इस विषय से कोई सम्बन्ध नहीं है। इससे मुझे वह अनुभव हुआ, जो दूसरों को भी हुआ है। स्थान और समय की दूरी मुझे उस बात पर एक नई, विश्लेषण करने वाली दृष्टि देती है, जिसका मैं वर्षों तक भाग रहा। मैं वहाँ सात वर्ष तक प्राचीन रहा और स्त्री की भूमिका के इस दृष्टिकोण को स्वयं माना, उसका बचाव किया और उसे लागू किया। पर दूरी ने इस प्रश्न पर नए सिरे से सोचना सम्भव बनाया। किसी समुदाय के इस बाहरी दबाव के बिना मैं समय के साथ दूसरी अन्तर्दृष्टियों तक पहुँचा। सम्भवतः दूरी के बिना यह सम्भव न होता।

मत-परिवर्तन की इस प्रक्रिया को, जिसे मैं पाठक से नहीं छिपाता, जान-बूझकर नकारात्मक रूप में पतन, धर्मत्याग, सांसारिकता के रूप में समझा जा सकता है। ये विचार-ढाँचे और उद्देश्यों पर लगाए जाने वाले निर्णय मैं अपनी युवावस्था से लगभग “भविष्यद्वाणी” जैसे पैमाने पर जानता हूँ। वे प्रबल हैं और गहरे बैठे हैं। उनसे छूटना कठिन है। मैं स्वयं उनका सक्रिय भाग था।

यह मेरी कलीसियाई स्थिति और अतीत है। बाइबल कलीसियाई जीवन में बड़ी स्वतन्त्रता देती है। एकत्र होने का स्वरूप निर्धारित नहीं किया गया है। एकमात्र सही मार्ग कोई नहीं है। चाहे कुछ मसीही ऐसा मानते हों। आराधना सभा का रूप – और ऐसे रूप बहुत-से हैं – स्वतन्त्र है! उसमें स्त्रियों की भूमिका इस पुस्तक का विषय है।

मेरे व्यक्तित्व के विषय में सबसे महत्वपूर्ण बात अभी बाकी है। या बेहतर कहूँ, मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति। मेरी पत्नी Christine। उसके लिए मैंने माता-पिता को छोड़ा, ताकि उसके साथ जीवन बाँट सकूँ। हमारे पाँच वयस्क बच्चे हैं। मेरी पत्नी एक सशक्त व्यक्तित्व है। एक सिंहनी-सी माँ, जो लड़ सकती है। एक बुद्धिमान स्त्री। जिसके लिए मैं सबसे बढ़कर आभारी हूँ, जैसे प्रभु में मेरे बहुत-से भाई भी अपनी पत्नियों के लिए आभारी हैं।

लिंग-सम्बन्धी प्रश्नों में मेरी व्यक्तिगत समझ की यात्रा का वह भी भाग है। उसके बिना मैं वहाँ न होता जहाँ आज खड़ा हूँ। मैं सीखने वाला हूँ और रहूँगा, भूल करने वाला भी।

हम दोनों एक स्वतन्त्र और लोकतान्त्रिक देश में बड़े हुए। पुरुष और स्त्री के समान अधिकारों के कानून के साथ, यद्यपि आज तक स्त्रियों के साथ भेदभाव होता है। मैं जर्मनी और पश्चिमी सांस्कृतिक जगत की बात कर रहा हूँ। हमने अभी तक कोई युद्ध नहीं देखा। कोई अकाल नहीं। इस वर्ष हम अपनी पीढ़ी की पहली महामारी देख रहे हैं। अनन्त और अटल सुरक्षा और उन्नति की भावना पहली बार हिल रही है।

अब तक के ये असाधारण रूप से सकारात्मक जीवन-अनुभव हमारी सोच को और दूसरी संस्कृतियों के प्रति हमारी दृष्टि को आकार देते हैं। मैं समान अधिकारों को आधुनिक लोकतन्त्र की एक आशीषमय उपलब्धि मानता हूँ। दास-प्रथा के उन्मूलन के समान, जो कभी भी परमेश्वर की इच्छा के अनुरूप नहीं थी।

मैं इसका उल्लेख इसलिए करता हूँ, क्योंकि हमारा सामाजिक-संस्कार (एक्सक्लूसिव) ब्रदरन आंदोलन की सोच से निर्धारित हुआ था। वहाँ पुरुष और स्त्री को समान मूल्य का माना जाता था और आज भी माना जाता है, पर स्त्री को कलीसिया की आराधना सभा में भागीदारी से बाहर रखा जाता है। स्त्री अधीन है। वह पुरुष की सहायक (Gehilfin) है। पुरुष सिर है और विवाह में अगुवाई उसी की है। ऐसा करके लोग मानते हैं कि वे परमेश्वर के वचन के आज्ञाकारी हैं। बाइबल के प्रति विश्वासयोग्य।

कोई यह विश्वास रख सकता है। पर यह प्रश्न पूछना उचित है कि यह आज के जीवन की वास्तविकता से कहाँ तक मेल खाता है, और क्या मेल खा भी सकता है। मेरा विवाह कैसा था, और मैंने माता-पिता, दादा-दादी और आज मित्रों और परिचितों के विवाहों को कैसा अनुभव किया, जो दृढ़ विश्वास के कारण लिंगों के भिन्न दर्जे या अधिकार को जीने का प्रयास करते हैं?

यद्यपि अपने विवाह के आरम्भिक वर्षों में मैंने बहुत-सी बातें स्वयं और अपनी पत्नी से परामर्श किए बिना तय कीं, आज मैं लगभग ऐसा नहीं करता। हम सबसे अच्छे तब चले, जब हमने एक टीम के रूप में निर्णय लिए और काम किया। आदर और प्रेम एकतरफ़ा रास्ता नहीं हैं। एक-दूसरे से विचारों का आदान-प्रदान और साथ-साथ जीना, बराबरी के स्तर पर बोलना और सुनना – यही आदर्श स्थिति है। हर किसी के मज़बूत और कमज़ोर दौर आते हैं। एक-दूसरे को पूरा करना, जब भी आवश्यक हो, और वैसे भी यह सामान्य है। हमेशा पुरुष ही आगे नहीं चलता। स्त्री भी हो सकती है। बारी-बारी से। एक-दूसरे को पूरा करते हुए। तालमेल के साथ। खुले मन से। सुधार स्वीकार करने को तैयार। सुनते हुए। साथ मिलकर प्रार्थना करते हुए। यही मैं जीवन की वास्तविकता के रूप में अनुभव करता हूँ। इसके अतिरिक्त कुछ भी पीछे की ओर कदम होगा। मैं प्राचीन पूर्व के समान, अब्राहम या दाऊद के समय के समान विवाह नहीं चलाना चाहता और न चलाऊँगा। न यीशु के समय के समान, और उतना ही कम धर्मसुधार के समय के समान। न अपने दादा-दादी के समान। इस बात में मैं आभारी हूँ कि मैं 21वीं शताब्दी में जी रहा हूँ।

अब मैं देखता हूँ कि जो लोग मानते हैं कि वे पुरुष और स्त्री के प्रश्न में बाइबल के प्रति विश्वासयोग्य रहकर जीते हैं, वे व्यवहार में हमसे शायद ही अलग जीते हैं। उनका विवाह भी समान अधिकारों से भरा है, एकतरफ़ापन से नहीं, बल्कि एकता में द्वैत से। इससे मेरा आशय यह है कि कुछ अपवादों को छोड़कर मुझे कहीं ऐसे मसीही विवाह दिखाई नहीं देते, जैसा पौलुस और पतरस उनका वर्णन करते हैं (इन पाठों पर विस्तार से चर्चा होगी)। इसके विपरीत, ये पत्नियाँ अपने पतियों के साथ बराबरी के स्तर पर चलती हैं। वे अधिकतर एक टीम हैं। यह सामान्य आरोप कि स्त्रियाँ अपने पतियों को अपने वश में करना या उन पर हुक्म चलाना चाहती हैं, अन्यायपूर्ण है। चाहे

ऐसा होता भी हो। पाप हर विवाह में छोटी या बड़ी आग का स्रोत बना रहता है। पर अच्छे आपसी सम्बन्ध में यह आग अधिकतर बुझ जाती है।

जब मैं इस पुस्तक में विवाह के विषय में अभी बताए गए दृष्टिकोण का और कलीसिया में स्त्री की एक भिन्न भूमिका का समर्थन करता हूँ और उसके कारण बताता हूँ, तो इससे कुछ लोगों में नासमझी, अस्वीकृति, घबराहट और आतंक उत्पन्न होगा। अपने विश्वास का समर्थन करने का हमेशा कुछ मूल्य चुकाना पड़ता है। विशेषकर तब, जब कोई अपनी कलीसिया या मित्रों के दृष्टिकोण के विरुद्ध तर्क देता है। मैं यह पुराने, रूढ़िवादी दृष्टिकोणों के प्रति आदर के साथ करता हूँ। यद्यपि मैं उन्हें गलत मानता हूँ। वे परमेश्वर के आत्मा को दबाते हैं और उसका विरोध करते हैं। मैं हर पाठक के लिए कामना करता हूँ कि वह पुस्तक के अन्त तक पढ़े और टिका रहे। अपनी पुस्तक की विषय-वस्तु पर मैं प्रसन्नता से बातचीत करूँगा, जब उसे पूरा पढ़ लिया गया हो।

आप मुझे अवश्य लिख सकते हैं, जब तक तर्क वस्तुनिष्ठ हों और आरोपों से मुक्त हों। मैं इस क्षेत्र को जानता हूँ, जहाँ विशेषकर इन प्रश्नों पर अक्सर गरमागरमी और अवस्तुनिष्ठता होती है, और कभी-कभी बात व्यक्तिगत और चोट पहुँचाने वाली हो जाती है।

हर कोई परमेश्वर के सामने स्वयं को जाँचे और यह समझे कि हमारी समझ टुकड़ों में और कदम-दर-कदम आती है, और हमारे परिवेश तथा उसके समय से गहराई से प्रभावित होती है।

अपनी युवावस्था से ही मुझे पवित्रशास्त्र पढ़ने की सलाह दी गई। प्रतिदिन। और उसका अध्ययन करने की। मैंने ऐसा किया। मैं उस अच्छी बाइबलीय नींव के लिए आभारी हूँ, जो मुझे “सभा” (Versammlung) में मिली। यह पुस्तक मेरे अतीत पर कोई आरोप या उसका लेखा-जोखा नहीं है, यदि कोई इसे ऐसा समझना चाहे। जो भी हो, बाइबल का अध्ययन मेरी आरम्भिक युवावस्था से मेरा शौक बन गया, और उससे भी बढ़कर। और आज तक बना हुआ है। उस समय मैं भी अपने आदर्शों की तरह पवित्रशास्त्र का एक प्रतिष्ठित शिक्षक बनना चाहता था, जिनमें से कुछ आज भी जीवित हैं। यह उद्देश्य बहुत पहले समाप्त हो चुका है। अब यदि कोई पवित्रशास्त्र का इतना अधिक और गहराई से अध्ययन करता है, तो हम क्या सोचते हैं, उससे कौन-सी अन्तर्दृष्टियाँ निकलती हैं? बार-बार वही?

कभी-कभी पवित्रशास्त्र के अध्ययन में हमारी दशा इस्राएल जैसी होती है, जिसकी आँखों पर परदा पड़ा है (2 कुरिन्थियों 3:15)। अक्सर पवित्र आत्मा की उपस्थिति के बावजूद हम हमेशा वही देखते हैं। पर जो बार-बार पवित्रशास्त्र का अध्ययन करता है, उसे आश्चर्य नहीं होना चाहिए जब यही आत्मा अचानक कुछ नया दिखाता है (मत्ती 13:52), लगभग 2000 वर्षों के बाद भी। क्या परमेश्वर का वचन अक्षय नहीं है? धर्मविज्ञानियों और बाइबल-विज्ञान की सहायता से भी। बाइबल स्कूलों और सेमिनारियों की सहायता से भी, जो पवित्रशास्त्र का अध्ययन करते हैं। जब कलीसिया में, विवाह में और परमेश्वर के राज्य में पुरुष और स्त्री के इस विषय-समूह में ऐसी नई या भिन्न अन्तर्दृष्टियाँ सामने आती हैं, जो सदियों से एकमात्र सही मानी गई बातों से अलग हैं, तो उन्हें केवल इसी कारण तुरन्त ठुकराया नहीं जाना चाहिए। यह विषय उद्धार के लिए निर्णायक नहीं है, और हमें ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए मानो यह हो! यह बाइबल के प्रति विश्वासयोग्यता की कसौटी नहीं है।

अनुभव से मैं जानता हूँ कि कई दशकों से प्रिय लगने वाले सत्यों पर प्रश्न उठाना कैसा होता है, क्योंकि पवित्रशास्त्र का प्रमाण उतना स्पष्ट और साफ़ नहीं है जितना हमेशा सोचा गया या सिखाया गया था। सोच बदलने की प्रक्रियाएँ पीड़ादायक होती हैं, वे हम पर असर डालती हैं। वे दिखाती हैं कि हम कितने भूल करने वाले, असहाय और बस परमेश्वर पर निर्भर हैं। उसके सामने हम अपनी शिकायत रख सकते हैं, उसके पास अपनी अज्ञानता, अपने प्रश्न और सन्देह भी ला सकते हैं। और अपनी वह “आदतन अन्धता” (Betriebsblindheit) भी, जो अनजाने में वहाँ आ

जाती है, जहाँ कोई केवल अपने कलीसियाई परिवेश में ही रहता है और अपने संसार को एकमात्र वैध या बाइबल के प्रति विश्वासयोग्य मानता है।

कुछ वर्षों तक मैं बाइबलीय यूनानी भाषा के एक फ़ोरम का सदस्य रहा। बहुत-सी बातों पर बात हुई और रचनात्मक चर्चा हुई। इस पुस्तक के विषय पर भी चर्चा हुई। उस समय मैंने बहुत कुछ इकट्ठा किया था और अब फिर से पढ़ा। कुछ वर्षों की दूरी से मुझे यह दिखाई देता है कि तर्क शायद ही कभी, या कभी नहीं, खुले परिणाम वाले होते थे। भाषा-ज्ञान चाहे कितना भी ऊँचा हो, किसी दृष्टिकोण के पक्ष में पहले से लिया गया निर्णय और संस्कार ही पक्ष या विपक्ष के तर्कों के लिए निर्णायक होते थे। इस मामले में, कि क्या स्त्रियाँ आराधना सभा में कुछ भी बोल सकती हैं, क्या उन्हें आज सिर ढाँकना चाहिए – शिक्षा देने या अगुवाई करने की तो बात ही छोड़ दें। क्या बाइबल से सचमुच सब कुछ सिद्ध या खण्डित किया जा सकता है?

मेरा इस विषय पर लिखने का कभी इरादा नहीं था। यह विवादित है और इस पर संघर्ष होता है। एक बारूदी सुरंगों वाला क्षेत्र। यहाँ कोई प्रशंसा नहीं मिल सकती। मैं अपना समय परमेश्वर के राज्य की दूसरी बातों में भली-भाँति लगा सकता था। फिर भी मैं जानता था कि मुझे व्यक्तिगत रूप से इसके लिए बुलाया गया है। मुझ पर यह आरोप लगाया जाएगा कि मैं युग-धारा के अनुसार ढल रहा हूँ। इसके विरुद्ध मैं कुछ नहीं कर सकता। मैं किसी मुक्ति-आन्दोलन वाले दृष्टिकोण का बचाव नहीं करता, जिसके लिए संसार संघर्ष करता है; मेरा मार्ग वही होना चाहिए जो बाइबल मुझे सिखाती है।

जहाँ मैं चलता हूँ, वहाँ तेरा वचन मेरे लिए चमकता है; वह मेरे मार्ग पर एक ज्योति है।

अद्भुत बातों से भरा है वह, जिसकी गवाही तू अपने वचन में देता है; इसलिए मैं पूरे मन से उसे थामे रहता हूँ।

भजन संहिता 119:105; 129 (Neue Genfer Übersetzung NGÜ – जर्मन बाइबल अनुवाद)

पठन-नमूने का अन्त

पूरी पुस्तक – लगभग 300 पृष्ठ – पेपरबैक के रूप में सीधे लेखक से और Kindle-ई-बुक के रूप में Amazon पर उपलब्ध है (जर्मन में)।

www.hans-joerg-ronsdorf.de

टिप्पणियाँ

1. अधिकतर स्थानों पर मैं स्पष्टता के लिए इस शब्द का स्त्रीलिंग रूप प्रयोग करता हूँ। आज प्रचलित, और बाइबल की मूल भाषाओं में भी, सामान्य पुल्लिंग (जेनेरिक मैस्क्यूलिन) है, जिसमें स्त्रीलिंग रूप भी सम्मिलित रहता है (देखें 6.4.1 के अन्तर्गत)।
2. Wunderli, 53, "Ihm gegenüber": Geschlechter-Gleichberechtigung in der Kirche und was die Bibel dazu (nicht) sagt, 2020